मोहब्बते रसूल ﷺ और हमारी ज़िन्दगी

मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

अनुवाद :

डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का मूल नाम	:	ज़िक्रे रसूल सल्ल०
किताब का नाम (अनुवादित)	:	मोहब्बते रसूल (सल्ल०) और हमारी ज़िन्दगी
लेखक	:	मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ इस्लाही
हिन्दी अनुवाद	:	डा० रफ़ीक़ अहमद (पी एच०डी०) प्रवक्ता मुस्लिम इण्टर कालेज फ़तेहपुर
हिन्दी एडीशन	:	2011
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	16
डिज़ाइनिंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर
क़ीमत	:	दुआये ख़ैर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द, फ़तेहपुर

بسم الله الرحمن الرحيم

खुदा की रहमत और कृपा से आपको ईमान की क़ीमती दौलत हासिल है, आप बहुत ही ख़ुश क़िस्मत हैं कि ईमान की रोशनी में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आपकी आख़िरी इच्छा यह है कि ईमान ही पर आपका ख़ात्मा हो, ख़ुदा आपको दृढ़ता और मज़बूती अता करे और आपकी यह इच्छा पूरी करे।   (आमीन)

कुरआन की नज़र में ईमान वाले वह लोग हैं, जो ख़ुदा से गहरी मुहब्बत रखते हैं **وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ**
"और ईमान वाले ख़ुदा से गहरी मुहब्बत रखते हैं" ईमान एक मआनवी की चीज़ है जिसे देखा नहीं जा सकता। फिर आपको यह कैसे इत्मीनान हो कि आप वाकई ख़ुदा से सच्ची और गहरी मुहब्बत रखते हैं या यह मात्र एक ख़्याल और फ़र्ज़ी है।

ख़ुदा ने इस मामले में भी आपकी भरपूर मदद फ़रमाई है, और आपको अंधेरे में नहीं छोड़ा है, ख़ुदा ने आपको एक ऐसी कसौटी बता दी है, जिसकी मदद से आप बहुत ही आसानी के साथ मालूम कर सकते हैं, कि आप ख़ुदा की मुहब्बत में किस हद तक सच्चे हैं, ख़ुदा से मुहब्बत की कसौटी रसूल सल्ल० की पैरवी है। ख़ुदा से मुहब्बत का दावा यक़ीनन सच्चा है अगर आपकी ज़िन्दगी रसूल सल्ल० की पैरवी और इताअत में गुज़र रही है। ख़ुदा का इर्शाद है –

اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ

"अगर तुम वाक़ई ख़ुदा से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो" (यानी नबी करीम सल्ल० की पैरवी करो)

इस इर्शाद का साफ़ मतलब यह है कि ख़ुदा से मुहब्बत के दावे में वही लोग सच्चे हैं जो रसूलल्लाह सल्ल० की पैरवी में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और जिनकी ज़िन्दगियां रसूल सल्ल० की पैरवी और इताअत से दूर हैं वह अपने मुहब्बत के दावे को अपने अमल से झुठला रहे हैं ।

दोस्तों ! मुहब्बत के जवाब में मुहब्बत ही मिलती है, आप ख़ुदा से मुहब्बत करेंगे तो वह भी आपसे मुहब्बत करेगा और आपके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। शर्त यह है कि आपकी मुहब्बत सच्ची हो और आप ज़िन्दगी के हर मैदान में रसूल सल्ल० की मुकम्मल पैरवी करके अपनी मुहब्बत का सुबूत पेश कर दें ।

एक मोमिन बन्दे के लिए इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा कि ख़ुदा उससे मुहब्बत करने लगे और उसे गुनाहों की गन्दगियों से पाक करके उसको माफ़ कर दे। ख़ुदा का इर्शाद है **يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَ يَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡ** *"तो अल्लाह तुम से मुहब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहो को माफ़ कर देगा"*

बेशक़ सुन्नते रसूल सल्ल० की पैरवी बन्दे को ख़ुदा का महबूब बना देती है, और ख़ुदा ऐसे बन्दे को गुनाहों से पाक कर देता है, मगर रसूल सल्ल० की पैरवी वही शख़्स कर सकता है जो रसूलुल्लाह सल्ल० से गहरी और सच्ची मुहब्बत रखता हो। रसूल सल्ल० से गहरी और सच्ची मुहब्बत के बग़ैर आप के तरीके और सुन्नतों पर चलना मुम्किन नहीं है, इसीलिये ख़ुदा की किताब ने भी मुहब्बते रसूल सल्ल० को ईमान की बुनियाद क़रार दिया है और ख़ुदा के रसूल सल्ल०

ने भी इस हक़ीक़त की वज़ाहत की है, क़ुरआन का इर्शाद है–

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِھِمْ

“ईमान वालों के लिए ख़ुदा के रसूल सल्ल० उनकी अपनी जानों से भी ज़्यादा प्रिय और श्रेष्ठ हैं ।

لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَ وَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ط

एक महफ़िल में नबी सल्ल० लोगों में यही हक़ीकत ज़ेह्न नशीन करा रहे थे, आप सल्ल० ने फ़रमाया– “तुममें से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसके माँ–बाप से, उसकी औलाद से और सारे ही लोगों से ज़्यादा महबूब (प्रिय) न बन जाऊँ ।”

इस महफ़िल में दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि० जैसे महान सहाबी भी मौजूद थे, कहने लगे रसूलुल्लाह सल्ल०! आप मुझे मां–बाप से भी ज़्यादा प्यारे हैं, औलाद से भी ज़्यादा प्रिय हैं, मगर अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ नहीं हैं । आप सल्ल० ने फ़रमाया– “अभी तुम्हारा ईमान मुकम्मल (पूर्ण) नहीं हुआ।” और फिर इस मुहब्बत में हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि० ने क्या मुक़ाम हासिल किया उसकी एक झलक आप उस वाक़िया में देखिये ।

ख़ुदा के रसूल सल्ल० इस दुनिया से रूख़सत हो चुके हैं, फ़ारूक़े आज़म रज़ि० मुहब्बते रसूल में मदहोश, नंगी तलवार लिये खड़े हैं, और वह कह रहे हैं कि जो शख़्स यह कहेगा कि रसूल सल्ल० का इन्तेक़ाल हो गया है, मैं उसका सर क़लम कर दूँगा । हुज़ूर सल्ल० अपने रब से मिलने गये हैं, और फिर तशरीफ़ लायेंगे ।

सहाब–ए–कराम, रसूलुल्लाह सल्ल० से किस कदर गहरी और सच्ची मुहब्बत रखते थे, उस की हल्की सी झलक आप इस वाक़िये में देखिये जो रसूल्लाह सल्ल० के एक नौ जवान सहाबी हज़रत अनस रज़ि० ने बयान किया है ।

‘‘रेगिस्तान के ख़ेमे में रहने वाले एक सहाबी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुये और पूछा ‘‘या रसूलुल्लाह ! क़ियामत कब आयेगी ? इतनी देर में नमाज़ के लिये जमाअत खड़ी हो गयी और आप नमाज़ पढ़ाने खड़े हो गये। नमाज़ के बाद उनको बुलाया और पूछा ‘‘कहो तुमने क़ियामत के लिये क्या तैयारी कर रखी है, उन्होंने सादगी से कहा ‘‘ या रसूल्लाह! मैंने नमाज़ व रोज़ों में कोई ग़ैर मामूली सरगर्मी नहीं दिखायी है, अलबत्ता मुझे ख़ुदा और उसके रसूल से मुहब्बत है, इसके जवाब में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया ‘‘आदमी इसी के साथ होगा जिससे उसे मुहब्बत है’’ ।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि यह ख़ुशख़बरी सुनकर सभी सहाब–ए–कराम रज़ि० इस क़दर ख़ुश हुये कि इस्लाम लाने के बाद मैंने उनको इस क़दर ख़ुश कभी नहीं देखा था ।’’ रसूल सल्ल० से गहरी और अटूट मुहब्बत ही आदमी को शरीअत पर चलने के लिये आमादा करती है, वह शख़्स रसूल सल्ल० की इताअत में दो क़दम भी नहीं चल सकता, जिस का दिल मुहब्बते रसूल सल्ल० से खाली है – और यह हक़ीकत भी ज़ेहन में रहना चाहिये कि इस्लाम में मुहब्बते रसूल सल्ल० के किसी ऐसे तसव्वुर (धारणा) की कोई गुन्ज़ाइश नहीं है, जो आप सल्ल० के तरीक़े और सुन्नत से बेपरवाही और बेफ़िक्री के साथ हो, सुन्नते रसूल को छोड़कर इश्के रसूल

सल्ल० का दावा झूठा है, सुन्नत की पैरवी पर आमादा करने वाली चीज़ रसूल सल्ल० की मुहब्बत है और सुन्नत से मुहब्बत ही दरअसल रसूल सल्ल० से मुहब्बत है, रसूलुल्लाह सल्ल० ने खुद फ़रमाया है कि मेरे सुन्नत को चाहने वाले ही दरअसल मेरे चाहने वाले हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया – ''जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की । बेफ़िक्री, लापरवाही, आसान पसन्दी, ग़फ़लत और ख़्वाहिशों और इच्छाओं के ग़ुलाम होकर कभी आदमी कोताही करता है और कर सकता है– और यह कोताही मुहब्बते रसूल सल्ल० से वंचित हो जाने की दलील नहीं है लेकिन यह ख़्याल व इत्मीनान कि सुन्नत से लगातार दूरी, लापरवाही और बेफ़िक्री रहते हुये भी आदमी आशिक़े रसूल है, सबसे बड़ा धोखा है।

रसूलुल्लाह सल्ल० से आपकी मुहब्बत का क्या हाल है, इसका जायज़ा ज़रूर लीजिये, लेकिन बिला वजह अपने से बदगुमानी (दुर्भावना) और मायूसी भी सही नहीं है और यह भी सही नहीं है कि आप अपनी सुस्ती और कोताहियों पर ध्यान ही न दें और इत्मीनान की सांस लेते रहें।

क्या आपने कभी ग़ौर किया कि दिन व रात में कितनी बार आपको रसूल सल्ल० की याद तड़पाती है ? और कितनी बार अपने आप आपकी ज़बान पर दरूद व सलाम के कलिमात (वाक्य) आ जाते हैं। नमाज़ में बेशक आप दरूद पढ़ते हैं, और दिन व रात की नमाज़ों में कई बार पढ़ते हैं– लेकिन इसके अलावा कभी हुज़ूर सल्ल० के बेशुमार और अनगिनत एहसानों को याद करके अक़ीदत व मुहब्बत के जज़्बात से बेताब और बेचैन होकर भी दरूद व सलाम के

नज़राने आपने पेश किये ? कभी यह सोच कर भी आपकी आंखें नम हुई हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने आपकी ख़ातिर जो तकलीफ़ें और मुसीबतें उठायी हैं आप इसका कोई बदला नहीं दे सकते ? क्या कभी आपने जज़्बात और मुहब्बत में डूबकर ख़ुदा से यह दुआयें की हैं कि पालनहार तेरे हबीब ने हमारी ख़ातिर जिस बेचैनी, और ग़म में अपनी रातें गुज़ारी हैं और जिन मुसीबतों और तकलीफ़ों में अपने दिन बिताये हैं उसका कोई बदला हम नहीं दे सकते। परवर दिगार! तू ही उन पर अपनी ख़ास रहमतें नाज़िल फ़रमा और उन्हें अपने क़ुरबत (सामीप्य) के वह बुलन्द दर्जात अता फ़रमा, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

क्या आपके दिल में कभी यह ख़्वाहिश पैदा हुई है, कि आप रसूलुल्लाह सल्ल० के दीदार और ज़ियारत (दर्शन) से अपनी आंखें रोशन करें, क्या कभी आप उनको देखने के लिये तड़पते हैं, क्या कभी आप इस तसव्वुर के साथ सोये हैं कि ख़्वाब में आपको रसूले अकरम सल्ल० की ज़ियारत नसीब हो, ज़ियारते रसूल सल्ल० के लिये आपने कभी किसी से कोई तदबीर या तरीक़ा पूछा है, क्या कभी उसकी ख़ातिर आपने दरूद व सलाम अधिक से अधिक पढ़ने का इहतेमाम (आयोजन) किया है ?

एक बार हज़रत मौलाना मुहम्मद अली मुन्गेरी रह० ने हज़रत फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० से सवाल किया कि ''कोई ख़ास दरूद शरीफ़ बताइये, जिससे रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़ियारत नसीब हो, फ़रमाया- कोई ख़ास दरूद तो नहीं है, बस ख़ुलूस और मुहब्बत पैदा करने की ज़रूरत है, फिर कुछ

देर के बाद फ़रमाया अलबत्ता हज़रत सैय्यद हसन रह० को इस दरूद का अमल फ़ायदेमन्द साबित हुआ ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عِتْرَتِهٖ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

"ऐ अल्लाह ! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्ल० पर और उनकी औलाद पर उन तमाम चीज़ों की तादाद के बकदर जो तेरे इल्म में हैं।" कभी आपको इस ग़म ने भी तड़पाया है कि रसूले अकरम सल्ल० का लाया हुआ दीन आज मग़लूब व मज़लूम (अधीन) है, आप सल्ल० की शरीअत ज़िन्दगी के हर मैदान से बेदख़ल है। और रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने ख़ून से जिस बाग़ को सींचा था, आज वह उजड़ रहा है, जिस दीन को क़ायम करने के लिए आपने मक्के की गलियों, ताइफ़ के बाज़ारों और बद्र व उहद् के मैदानों में तरह-तरह की मुसीबतें बर्दाश्त की थीं, आज वह दीन मिटाया जा रहा है- क्या यह सोचकर आपकी बेचैनी बढ़ जाती है- और आप इस पुख़्ता इरादे के साथ उठ खड़े होते हैं कि अपना सब कुछ आप इस राह में क़ुर्बान करके ही ख़ुदा के हुज़ूर पहुंचेगे, रसूले करीम सल्ल० से गहरे तअल्लुक़ के बग़ैर आपकी पैरवी न मुम्किन है और न ऐसी पैरवी मतलूब (वांछित) है- ख़ुदा की मुहब्बत के लिये जिस इत्तेबाअे रसूल को कसौटी बताया गया है वह वही इत्तेबाअ (आज्ञापालन) है जो सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत के साथ की जाये ।

इस्लाम सुन्नते रसूल की पैरवी का नाम है :-

आप की सीरत, नबी सल्ल० की सीरत से जिस क़दर क़रीब है, उसी क़दर आप अपने ईमान व इस्लाम में सच्चे और मुख़लिस हैं। इस्लाम इसके सिवा और कुछ नहीं है कि

आपकी पूरी ज़िन्दगी ज़्यादा से ज़्यादा सीरते रसूल सल्ल० के मुताबिक़ हो और आप हर मामले में सुन्नते रसूल सल्ल० की मुकम्मल पैरवी करें, नबी सल्ल० पर नुबूअत ख़त्म हो गयी, और अब रहती दुनिया के लिये ख़ुदा के बन्दों की कामयाबी और सफलता सिर्फ़ आप सल्ल० की इताअत और पैरवी में है, रसूल सल्ल० से तअल्लुक़ तोड़ कर और आप सल्ल० की सुन्नत से मुँह मोड़ कर अगर कोई ख़ुदा की रिज़ा (ख़ुशी) हासिल करने को मुम्किन समझता है तो वह ज़बरदस्त क़िस्म की जिहालत और फ़रेब में मुब्तेला हैं। ख़ुदा की नज़र में आपका कोई भी अमल क़ुबूल नही है अगर वह सुन्नते रसूल के मुताबिक़ नहीं।

आप ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, उससे मुहब्बत का दावा करते हैं, लेकिन आपका यह ईमान और दावाये-मुहब्बत हर्गिज़ ऐतबार के लायक़ नहीं है, अगर आप नबी सल्ल० की इताअत और पैरवी में सरगर्म नहीं हैं। आपका दावाये-मुहब्बत उसी वक़्त ऐतबार के लायक़ होगा, जब आप नबी सल्ल० की पैरवी करें, आपकी मुहब्बत के जवाब में ख़ुदा आपसे ज़रूर मुहब्बत करेगा, और आपके गुनाहों को माफ़ भी फ़रमा देगा। लेकिन उसके लिये ज़रूरी है कि आप रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवी करके अपनी मुहब्बत का सुबूत दें। ख़ुदा का इर्शाद है-

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْ بَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ'' رَّحِیْم''

''ऐ रसूल ! लोगों से कह दीजिये कि अगर तुम वाक़ई ख़ुदा से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी इख़्तियार करो। ख़ुदा तुमसे

मुहब्बत करेगा और तुम्हारी ख़ताओं को दरगुज़र फ़रमायेगा। वह बहुत ही माफ़ करने वाला और बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

“खुदा की नज़र में खुदा से इस तरह के तअल्लुक़ और सम्बंध की कोई क़ीमत नहीं है जो आप सल्ल० की सुन्नतों से निश्चिन्त और बेपरवाह होकर अपने मन-माने तरीक़े पर खुदा से क़ायम कर रखा है, रसूल सल्ल० से बेपरवाई और उपेक्षा रसूल सल्ल० ही की तौहीन नहीं है बल्कि इस दुनिया के खालिक़ (सृष्टा) की तौहीन है, रसूल खुदा के नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) और खुदा के तर्जुमान हैं वह भेजे ही इसी लिये जाते हैं कि खुदा के हुक्म से उनकी इताअत और पैरवी की जाये और शौक़ और मुहब्बत से की जाये।

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ط (النساء ٦٤)

“हमने जो रसूल भी भेजा है इसीलिये भेजा है कि खुदा के इज़्न (मर्ज़ी) से उसकी इताअत की जाये”। रसूल सल्ल० की इताअत के बग़ैर, रसूल सल्ल० पर ईमान बिल्कुल बेमायने है, जो लोग रसूल सल्ल० की इताअत से आज़ाद होकर रसूल सल्ल० पर ईमान का दावा करते हैं वह खुद भी धोखे में हैं और दूसरों को भी धोखा देना चाहते हैं, खुदा के आदेशों को मानने और उसकी इताअत करने का सिर्फ़ एक ही तरीका है कि रसूल सल्ल० की इताअत की जाये- रसूल सल्ल० की इताअत ही दरअस्ल खुदा की इताअत है। और रसूलुल्लाह सल्ल० की नाफ़रमानी (अवज्ञा) दरअसल खुदा की नाफ़रमानी है। रसूल सल्ल० की अज़मत का इन्कार करने वाले हक़ीक़त में खुदा की अज़मत के इन्कारी हैं। और रसूल सल्ल० के हुक्म

और सुन्नत से बग़ावत करने वाले दरअस्ल ख़ुदा के बाग़ी हैं। इसलिये कि रसूल सल्ल० अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहते वह ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाते हैं –

وَمَا يَنۡطِقُ عَنِ الۡهَوٰىؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا وَحۡىٌ يُّوۡحٰىۙ

"वह अपनी ख़्वाहिश से कुछ नहीं बोलते यह तो आस्मानी वही है जो उन पर नाज़िल की जाती है।

रसूल सल्ल० की शिक्षाओं की पैरवी और रसूल सल्ल० की इताअत ही ज़रीआ है ख़ुदा की इताअत का। इसके सिवा ख़ुदा की मर्ज़ी पर चलने का और कोई ज़रीआ और तरीक़ा नहीं है। ख़ुदा का इर्शाद है– مَنۡ يُّطِعِ الرَّسُوۡلَ فَقَدۡ اَطَاعَ اللّٰهَ‌ۚ "जिसने रसूल सल्ल० की इताअत की, उसने यक़ीनन मेरी ही इताअत की" और जिसने रसूल सल्ल० की अपने तमाम मामलात के फ़ैसला करने वाला न माना वह ईमान से वंचित है, और ख़ुदा ने अपनी बड़ाई अज़्मत की क़सम खाकर कहा है कि ऐसे लोग हरगिज़ मोमिन नही हैं।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوۡكَ فِيۡمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا يَجِدُوۡا فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُوۡا تَسۡلِيۡمًا (النساء ٦٥)

"ऐ रसूल ! आप सल्ल० के रब की कसम यह हर्गिज़ मोमिन नहीं हो सकते जब तक अपने सारे इख़्तिलाफ़ात (विवादों और मतभेदों) में यह आपको फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर आप जो कुछ फ़ैसला करें इस पर अपने दिलों में भी कोई तन्गी महसूस न करें, बल्कि आप सल्ल० के फ़ैसले पर सरेतस्लीम (आज्ञाशीष) झुका दें"।

ज़ाहिर है ख़ुदा का यह फ़रमान सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़िन्दगी ही तक के लिये नहीं है बल्कि क़ियामत

तक के लिये है, और रहती दुनिया तक आदमी के मोमिन होने और न होने का फ़ैसला इसी पर है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की तालीमात (शिक्षाओं) और आप सल्ल० की सुन्नतों को आदमी ज़िन्दगी के हर मामले में सनद (प्रमाण) मानता है या नहीं। ख़ुदा के नज़दीक अपने ईमान के दावे में सिर्फ वही लोग सच्चे और पक्के हैं जो दिल व जान से रसूल सल्ल० के फ़ैसले को क़ुबूल करें और दिल की पूरी आमादगी के साथ उसकी इताअत करें।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया– ''क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० ही जान है, अगर अब मूसा अलै० जैसे पैग़म्बर भी मौजूद हों, तो किसी के लिये यह गुन्जाइश नहीं कि वह रसूल सल्ल० को छोड़कर हज़रत मूसा अलैह की पैरवी करे। और ख़ुद उनके लिये भी इस के सिवा कोई चारा न होगा कि वह हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही की पैरवी करें।''

यह समझना बहुत ही बड़ी गुमराही है कि आदमी शरीअत की पाबन्दियों से आज़ाद होकर या रसूलुल्लाह सल्ल० पर ईमान लाये बग़ैर भी इस्लाम पर अमल कर सकता है, और मुस्लिम व मोमिन हो सकता है। मोमिन और मुस्लिम होने के लिये ज़रूरी है कि आदमी रसूलुल्लाह सल्ल० पर ईमान लाये और आप सल्ल० की इताअत करे। इस्लाम की इस्तिलाह (Term) में मुस्लिम वही शख़्स है, जो ख़ुदा की इताअत सुन्नते रसूल सल्ल० के मुताबिक करें।

यह बात बिल्कुल सही है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले के रसूलों पर ईमान लाने वाले और उनकी शरीअत

के मुताबिक़ ख़ुदा की इताअत करने वाले सारे लोग मुस्लिम थे, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल० की आमद के बाद अब ख़ुदा की इताअत करने और मुस्लिम होने की सिर्फ़ एक ही शक्ल है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की इताअत और पैरवी की जाये और आप सल्ल० की सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी जाये । उस शख़्स का दावा-ए-इस्लाम बिल्कुल झूठा है, जो आप सल्ल० पर ईमान लाने और आप की इताअत करने का क़ायल नहीं है। और इसी तरह उस शख़्स का ईमान व इस्लाम भी ऐतबार के लायक़ नहीं है, जो रसूलुल्लाह सल्ल० को सिर्फ़ रसूलुल्लाह समझ लेना ही काफी समझता है और आप सल्ल० की इताअत और पैरवी की ज़रूरत नहीं समझता। नबी सल्ल० का इर्शाद है :

तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस की ख़्वाहिशें इस शरीअत के आधीन न हो जायें जो, मैं लेकर आया हूँ (बुखारी) । इस्लाम की शाहराह (राजमार्ग) पर चलने के लिये ज़रूरी है कि आप के दिल में नबी सल्ल० के लिये बेमिसाल अक़ीदत व मुहब्बत हो, ऐसी मुहब्बत जो दुनिया की हर मुहब्बत पर ग़ालिब हो और अमल की ज़िन्दगी में इस मुहब्बत की पहचान यह है कि आप सल्ल० को सुन्नते रसूल सल्ल० से मुहब्बत हो और आपके दिल में रसूल सल्ल० की इज़्ज़त व अज़मत और वफ़ादारी व कुर्बानी का ज़बरदस्त जज़्बा हो, रसूलुल्लाह सल्ल० की सीरत को जानने की ग़ैर मामूली तड़प हो, ज़िन्दगी के हर मोड़ पर आप यह जानने के लिये फ़िक्रमन्द हों कि रसूल सल्ल० का अमल इस मामले में क्या था, या क्या होगा --- रसूल सल्ल० की सीरत के

मुताबिक़ अपनी सीरत को ढालना और दिल व जान से आप सल्ल० के नक़्शे-क़दम (पदचिन्हों) पर चलना ही दरअस्ल ईमान व इस्लाम है। इताअते रसूल से लगातार मुँह मोड़ना और मुसलसल नाफ़रमानी के साथ रसूल सल्ल० पर ईमान के दावे के कोई मायने नहीं रह जाते, ऐसे गुस्ताख़ों के इस रवइये को ख़ुदा के रसूल सल्ल० ने इन्कारे रसूल का नाम दिया है, और यह वह भयानक चेतावनी है कि अगर ईमान की कोई किरन भी दिल में मौजूद हो तो आदमी का सुकून ग़ारत हो जाये ।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जायेंगे सिवाये उस शख़्स के जो मेरा इन्कार करे। सहाबा रज़ि० ने पूछा इन्कार कौन करता है, फ़रमाया जिसने मेरी फ़रमा बरदारी की वह जन्नत में दाखिल होगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो उसने मेरा इन्कार किया ।

इस हदीस में किसी इशारे और संकेत में नहीं बल्कि साफ़ अन्दाज़ में रसूल सल्ल० ने अपनी नाफ़रमानी को अपना इन्कारी क़रार दिया है। यह चेतावनी मोमिन को झिझोड़ती है कि वह यूँ ही लापरवाही के साथ अपने सुबह व शाम न बिताये बल्कि रुक कर सोचे। अगर मोमिन पर इस मिसाल से भी कंपकपी तारी न हो तो समझ लेना चाहिये कि ईमान की चिंगारियां बुझ चुकी हैं, या बुझने के क़रीब हैं। और किसी समझदार के लिये ज़मीन व आसमान की फ़िज़ा में इससे बढ़ कर चिन्ता और परेशानी की और कोई बात नहीं हो सकती ।

दरूद व सलाम

सलाम उस पर कि जिसने बेकसों की दस्तगीरी की
सलाम उस पर कि जिसने बादशाही में फ़क़ीरी की,
सलाम उस पर कि इसरारे मोहब्बत जिसने समझाये
सलाम उस पर कि जिसने ज़ख़्म खाकर फूल बरसाये,
सलाम उस पर कि जिसने ख़ूँ के प्यासों को क़बायें दीं
सलाम उस पर कि जिस ने गालियाँ सुन कर दुआयें दीं,
सलाम उस पर वतन के लोग जिस को तंग करते थे,
सलाम उस पर कि घर वाले भी जिससे जंग करते थे,
सलाम उस पर कि जिसके घर में चांदी थी, न सोना था,
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिसका बिछौना था,
सलाम उस पर जो उम्मत के लिये रातों को रोता था,
सलाम उस पर जो फ़र्शे ख़ाक पर जाड़े में सोता था,
सलाम उस पर कि जिसने बे क़रारों को सुकूँ बख़्शा,
सलाम उस जाने रहमत पर चचा का जिसने ख़ूँ बख़्शा,
सलाम उस पर कि जिसकी चांद, तारों ने गवाही दी,
सलाम उस पर कि जिसकी संग पारों ने गवाही दी
सलाम उस पर कि जिसने ज़िन्दगी का राज़ समझाया,
सलाम उस पर कि जो ख़ुद बद्र के मैदान में आया,
सलाम उस पर कि जिसका नाम लेकर उसके शैदाई
उलट देते हैं तख़्ते क़ैसरीयत औजे दाराई,

सलाम उस पर कि जिस का नाम गोया इस्म आज़म है,
सलाम उस पर कि सारे अम्बिया में जो मुकर्रम है।

– मौलाना माहिरुल क़ादरी रह०